IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

महिला महाविद्यालयों एवं सहशिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

बलराम सिंह

शोधार्थी शिक्षा शास्त्र विभाग

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय,विद्यानगरी, झुंझुनूं, राजस्थान

डॉ. हरिश्चंद्र सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षा शास्त्र विभाग

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय,विद्यानगरी, झुंझुनूं, राजस्थान

ABSTRACT

शुरुवाती दौर में महिला व पुरुषों के लिए अलग- अलग शिक्षा व्यवस्थाकी शुरुवात हुयी। महिलांए स्कूल में पढ़ने जाने लगी किन्तु महिला शिक्षा में बिशेष प्रगति नही हुयी। आजादी के समय महिला साक्षरता दर मात्र 8 प्रतिशत थी। कम साक्षरता दर के कारणो को जाने का प्रयाम किया गया और पाया गया महिला व पुरुषो का एक साथ एक स्कूल मे पढ़ना कम साक्षरता दर के प्रमुख कारणों में से एक था। अतः महिला साक्षरता दर बढ़ाने के लिए के महिलाओ के लिए अलग से विद्यालय खोले गये और परिणाम स्वरुप महिला साक्षरता दर तो बढी किन्तु वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र में बढती प्रतिस्पर्धा ने विद्यालय वातावरण, विद्यार्थिों की भावनात्मक क्षमता, उनके जीवन जीने की शैली एवं उनकी समायोजन क्षमता को बुरी तरह से प्रभावित किया है। आये दिन अखवारो में निकलता रहता है कि शोहदे के छेड़ने के कारण बालिका ने आत्म हत्या कर ली या फिर छेड़खानी की वजह से विद्यालय जाना छोड़ दिया। दूसरी तरफ बढती प्रतिस्पर्धा ने विद्यार्थिों की भावनात्मक क्षमता, उनके जीवन जीने की शैली एवं उनकी सामाजिक समायोजन क्षमता को इतना प्रभावित किया है कि समाज में तलाक, आत्महत्या और एकल परिवार का प्रचलन बढ गया है।

Keywords: महिला महाविद्यालय सहशिक्षा समायोजन शैक्षिक उपलब्धि

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, November 2025
Impact Factor: 7.67

प्रस्तावना

शिक्षा में लैंगिक समानता के संदर्भ में, इन मुद्दों का तुलनात्मक विश्लेषण विशेष रूप से प्रासंगिक है। सहशिक्षा संस्थान विविधता को बढ़ावा देकर छात्रों को वास्तविक दुनिया की अंतःक्रियाओं के लिए शिक्षित करते हैं, जबकि समान लिंग वाले कॉलेज एक केंद्रित माहौल प्रदान करके महिला छात्रों को सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं। दोनों प्रणालियों के अपने फायदे और नुकसान हैं, और यह जानना कि वे महिला छात्रों को कैसे प्रभावित करती हैं, शिक्षकों को स्वागतयोग्य और उत्साहजनक वातावरण बनाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, सह-शिक्षा विश्वविद्यालय लैंगिक पूर्वाग्रहों को दूर करने और समावेशन को बढ़ावा देने के लिए कदम उठा सकते हैं, जबकि एकल-लिंगी स्कूल ऐसे कार्यक्रम शामिल कर सकते हैं जो छात्रों को मिश्रित-लिंगी रोजगार के लिए तैयार करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक कारक भी इन परिणामों को प्रभावित करते हैं। कुछ क्षेत्र सह-शिक्षा को समानता को बढ़ावा देने की एक प्रगतिशील रणनीति मानते हैं, जबकि अन्य एकल-लिंगी शिक्षा को महिला विद्यार्थियों को सामाजिक दबावों से बचाने के साधन के रूप में देखते हैं। ये सांस्कृतिक विचित्रताएँ छात्रों की अपने कॉलेज परिवेश के बारे में धारणाओं और बदले में, उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास पर प्रभाव डालती हैं। उदाहरण के लिए, सह-शिक्षा वातावरण महिला छात्रों को पूर्वधारणाओं का सामना करने और उन पर विजय पाने के लिए प्रेरित कर सकता है, जबकि एकल-लिंगी संस्थान महिलाओं को सख्त लैंगिक मानकों वाले समुदायों में अपनी क्षमता विकसित करने के लिए एक सुरक्षित वातावरण प्रदान कर सकते हैं। समायोजन क्षमता और भावनात्मक क्षमता एक गतिशील और परस्पर संबंधित तरीके से परस्पर क्रिया करते हैं। जिन छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है, वे तनाव को बेहतर ढंग से संभालने और दूसरों के साथ संबंध बनाने में सक्षम होते हैं, जो दोनों ही समायोजन के लिए महत्वपूर्ण हैं। संचार और समस्या-समाधान क्षमताएँ जीवन कौशल के ऐसे उदाहरण हैं जो विद्यार्थियों को सामाजिक और शैक्षणिक बाधाओं को दूर करने में मदद करते हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो ये गुण छात्रों को कॉलेज और उसके बाद भी सफल होने में मदद करते हैं। शिक्षक सहशिक्षा और एकल-लिंगी विश्वविद्यालयों में इन तत्वों के प्रकट होने के तरीकों की तुलना करके छात्राओं के समग्र विकास में सहायता के लिए प्रभावी अभ्यास खोज सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, इस शोध के उच्च शिक्षा नीति और व्यवहार पर भी प्रभाव पड़ता है। संस्थान इन निष्कर्षों का उपयोग सहकर्मी मार्गदर्शन कार्यक्रम या परामर्श सेवाओं जैसी पहल करने के लिए कर सकते हैं जो भावनात्मक क्षमता में सुधार करें। यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र अपने शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन दोनों में सफलता के लिए तैयार हों, पाठ्यक्रम में जीवन कौशल निर्देश को

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

शामिल करना संभव है। इसके अलावा, शैक्षणिक परिवेश चाहे जो भी हो, समावेशी नीतियों, अभिविन्यास कार्यक्रमों और आसानी से उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से समायोजन को सुगम बनाने वाला वातावरण बनाना छात्राओं को सफल होने में मदद कर सकता है।

हमारे देश में स्त्री शिक्षा संसार के अन्य देशों की तुलना में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राचीनतम है। स्त्री शिक्षा की अवहेलना करना समाज की भावी पीढ़ी के साथ अन्याय करना है ।स्त्री समाज का आधार है उन्हें शिक्षित करना पूरे समाज को शिक्षित करना है। स्त्री शिक्षा के बिना लोक शिक्षित नहीं हो सकते हैं स्त्रियों का कार्य क्षेत्र घर तक सीमित नहीं रहना चाहिए क्योंकि विषम परिस्थितियों में उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता हो सकते हैं स्त्रियों के लिए शिक्षा को ऐसी रूपरेखा बनाई जाए जो जीवन को सफल बनाने में सहायक हो इस समाज का नवनिर्माण करना है तो स्त्रियों को वास्तविक को बालक की प्रारंभिक पाठशाला घर है और माता है उसकी प्रथम शिक्षिका है। बालक का भविष्य सदैव उसकी माता द्वारा निर्मित किया जाता है शिक्षित नारी ही परिवार देश समाज को गरमाणित करती है देश की सांस्कृतिक सामाजिक आर्थिक प्रस्तुत को ध्यान रखकर उसकी शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिए। अंत में, सहशिक्षा और एकल-लिंगी संस्थानों में छात्राओं के कॉलेज के वातावरण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जीवन कौशल और समायोजन क्षमता की तुलना करने से उनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। प्रत्येक प्रणाली के लाभ और हानि का विश्लेषण करके, शिक्षक और विधायक ऐसी परिस्थितियाँ स्थापित कर सकते हैं जो छात्राओं को उनकी सर्वोच्च क्षमता का एहसास कराएँ। यह शोध न केवल व्यक्तिगत शिक्षण रणनीतियों के महत्व पर बल देता है, बल्कि विश्वविद्यालयों द्वारा अपने छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने की गारंटी के लिए निरंतर अध्ययन की आवश्यकता पर भी बल देता है। इस तरह का शोध लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और ऐसी शिक्षण परिस्थितियाँ बनाने में आवश्यक बना रहेगा जहाँ शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव के साथ सभी छात्र फल-फूल सके प्रारंभ में जब आर्थिक कर्म से स्त्रियों के लिए अलग विद्यालय खोलने की कठिनाई होने लगे तो शिक्षामित्र का ध्यान सह शिक्षा की ओर गया किंतु हमारे देश की परंपरा मान्यता सामाजिक नियंत्रण कारण सा शिक्षा पर विवाद उत्पन्न हुआ। सह शिक्षा साधारण अर्थ में एक ही संस्था में एक ही विधि से, समान विषयों को ,एक ही अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाना है। सर शिक्षा एक ऐसी स्थिति है जिसमें छात्र छात्राओं को एक ही समय एक स्थान पर एक ही बल से एक ही अनुशासन में समान पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। भारत में सह शिक्षा का वर्णन वैदिक काल मिलता है आधुनिक काल में सह शिक्षा के प्रश्न को लेकर रूढ़िवादी ने इसके विरोध में विचार प्रकट किया स्त्री शिक्षा के राष्ट्रीय समिति के रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक स्तर और उच्च स्तर पर लोग शिक्षा का विरोध नहीं करते किंतु माध्यमिक शिक्षा स्तर पर इसका विरोध देखा गया है। शैक्षिक आधार पर एक ही संस्था में बालक बालिकाओं को पढ़ने से उनमें स्पर्धा की भावना बढ़ती है जो कि उन्हें प्रेरणा प्रदान करती है और इस प्रकार दोनों की कार्य क्षमता में वृद्धि होती है। सामाजिक आधार पर उन्हें साथ-साथ कार्य करने और सामाजिक जीवन व्यतीत करने में व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त होता है सच शिक्षा अनुशासन स्थापित करने में सहायक होती है। एस शिक्षा के माध्यम से अनावश्यक खर्च नहीं होता और धन का सदुपयोग अन्य सुविधाओं में किया जा सकता है मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि साथ-साथ पढ़ने पर बालक बालिकाओं को एक दूसरे के प्रति जिज्ञासा व्रत शांत रहती है एस शिक्षा संस्थानों में पढ़ने वाले छात्राओं का दृष्टिकोण भिन्न

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

होता है। नगरों की अपेक्षा गांव में सर शिक्षा के पक्ष में लोग नहीं दिखाई देते। वह सहशिक्षा को पाश्चात्य सभ्यता के देन मानते हैं। अंत में, सहशिक्षा और एकल-लिंगी संस्थानों में छात्राओं के कॉलेज के वातावरण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जीवन कौशल और समायोजन क्षमता की तुलना करने से उनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। प्रत्येक प्रणाली के लाभ और हानि का विश्लेषण करके, शिक्षक और विधायक ऐसी परिस्थितियाँ स्थापित कर सकते हैं जो छात्राओं को उनकी सर्वोच्च क्षमता का एहसास कराएँ। यह शोध न केवल व्यक्तिगत शिक्षण रणनीतियों के महत्व पर बल देता है, बल्कि विश्वविद्यालयों द्वारा अपने छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने की गारंटी के लिए निरंतर अध्ययन की आवश्यकता पर भी बल देता है। इस तरह का शोध लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और ऐसी शिक्षण परिस्थितियाँ बनाने में आवश्यक बना रहेगा जहाँ शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव के साथ सभी छात्र फल-फूल सके।

उद्देश्य

1. महिला महाविद्यालय तथा सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. महिला महाविद्यालय तथा स्वास्थ्य शिक्षा महत्व में अध्यनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. महिला महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध ज्ञात करना।
4. सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरक्षत्रों की सामाजिक क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्ध में से संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएं

1.छात्राओं के समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्ध में सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्रों की संयोजन क्षमता एवं शैक्षिक उद्योग में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
4. छात्रों की समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक सह संबंध नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है न्यादर्श के रूप में लखनऊ जनपद में अध्यनरत **50** छात्राएं महिला महाविद्यालय से तथा **50** छात्राएं सहशिक्षा महाविद्यालय से उद्देश्य परक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा चयन किया गया है। प्रदत्तों के संकलन के लिए एस०पी० गुप्ता एवं अलका गुप्ता द्वारा निर्मित छात्र समायोजन प्रश्नावली तथा शैक्षिक उपलब्ध हेतु छात्राओं के विगत वर्ष के परीक्षा प्राप्तांको के कुल प्रतिशत को लिया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी मूल्य एवं गुणनफल आघूर्ण से संबंध गुणांक की गणना की गई है।

परिणाम तथा विवेचन

महिला महाविद्यालयों तथा सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्यनरत छात्राओं के विभिन्न समायोजन क्षमताओं में अंतर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी-अनुपात

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

क्र ०सं०	समायोजन क्षमता	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	शैक्षिक समायोजन	सह शिक्षा	50	11.8	3.25	2.91	0.01
		महिला	50	10.2	2.25		
2.	संवेगात्मक समायोजन	सह शिक्षा	50	16.3	2.95	4.20	0.01
		महिला	50	14.2	2.05		
3.	पारिवारिक समायोजन	सह शिक्षा	50	15.4	2.80	2.16	0.05
		महिला	50	14.3	2.30		
4.	स्वास्थ्य संबंधित समायोजन	सह शिक्षा	50	14.2	3.20	4.92	0.01
		महिला	50	16.2	2.90		
5.	सामाजिक समायोजन	सह शिक्षा	50	14.2	3.00	3.60	0.01
		महिला	50	12.4	2.60		

उपरोक्त सारणी -01 के क्रम संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है की परिगणित टी-मूल्य 2.91 है जोकि स्वतत्रयांश 98 पर 0.01 सार्थक स्तर के लिए निर्धारित टी-मान 2.58 से अधिक है जो कि सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

क्रम संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है की परिगणित टी-मूल्य 4.20 है जो की स्वतंत्रयान्स 98 पर 0.01 सार्थक स्तर के लिए निर्धारित टी-मान 2.58 से अधिक है जोकि सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर है।

क्रम संख्या -3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिगणित टी-मूल्य 2.6 है जो कि स्वतंत्रयान्स 98 पर 0.05 सार्थक स्तर के लिए निर्धारित टी-मान 1.96 से अधिक है जो की सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं के पारिवारिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

क्रम संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिगणित टी-मूल्य 4.92 है जो कि स्वतंत्रयांश 98 पर 0.05 सार्थक स्तर के लिए निर्धारित टी-मान 2.58 से अधिक है जो कि सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी समायोजन में सार्थक अंतर है।

क्रम संख्या 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिगणित मूल्य 3.6 0 है जोकि स्वतंत्रयान्स 98 पर 0.05 सार्थक स्तर के लिए निर्धारित टी-मान 2.58 से अधिक है जो कि सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं की सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

तालिका संख्या -02

महिला महाविद्यालय तथा सहशिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धियां को दर्शाते मध्यमान,मानक विचलन व टी-अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी- मूल्य	सार्थकता स्तर
महिला	50	50.8	5.4	5.83	0.01
सह शिक्षा	50	57.8	6.3		

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

उपरोक्त सारणी 2 के अवलोकन से स्पष्ट है की परिगणित टी-मूल्य 5.83 है जो कि स्वतंत्रयान्स 98 पर 0.01 सार्थक स्तर के लिए निर्धारित टी-मान 2.58 से अधिक है जो की सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धियां में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या-03

महिला महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह- संबंध को दर्शाता सह-संबंध गुणांक

समूह	संख्या	सह-संबंध गुणांक
महिला महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं	50	0.584

तालिका संख्या 03 से स्पष्ट है कि महिला महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए परिगणित से सह-संबंध गुणांक .584 है जो सार्थकता के लिए निर्धारित सह-संबंध गुणांक सारणी मान से अधिक होने के कारण सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि महिला महाविद्यालय में धंधा छात्राओं की समय क्षमता व शैक्षिक उपलब्ध के मध्य धनात्मक सार्थक सह-संबंध है।

सारणी संख्या-04

सहशिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह- संबंध को दर्शाता सह-संबंध गुणांक

समूह	संख्या	सह-संबंध गुणांक
सहशिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं	50	0.683

तालिका संख्या 04 से स्पष्ट है कि महिला महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए परिगणित से सह-संबंध गुणांक .683 है जो सार्थकता के लिए निर्धारित सह-संबंध गुणांक सारणी मान से अधिक होने के कारण सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि महिला महाविद्यालय में धंधा छात्राओं की समय क्षमता व शैक्षिक उपलब्ध के मध्य धनात्मक सार्थक सह-संबंध है।

निष्कर्ष

1. महिला महाविद्यालय तथा सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है। सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की शैक्षिक समायोजन क्षमता महिला महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गई है।
2. महिला महाविद्यालय तथा सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है। सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की संवेगात्मक समायोजन क्षमता महिला महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गई है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

3. महिला महाविद्यालय तथा सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है। सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की शैक्षिक समायोजन क्षमता महिला महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गई है।
4. महिला महाविद्यालय तथा सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के पारिवारिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है। सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की पारिवारिक समायोजन क्षमता महिला महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गई है।
5. महिला महाविद्यालय तथा सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है। सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की स्वास्थ्य संबंधी समायोजन क्षमता महिला महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की अपेक्षा कम पायी गई है।
6. महिला महाविद्यालय तथा सह शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है। सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की शैक्षिक समायोजन क्षमता महिला महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गई है।
7. महिला महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धियों में धनात्मक सह संबंध पाया गया है अर्थात समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे को धनात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि महिला महाविद्यालयों में अध्ययनरत जिन छात्राओं की समायोजन क्षमता अधिक होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है।
8. सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धियों में धनात्मक सह संबंध पाया गया है अर्थात समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे को धनात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि सह शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत जिन छात्राओं की समायोजन क्षमता अधिक होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है।

सदर्भ ग्रन्थ सूंची

- Kwong D. & Davis J. R (2005). School Climate for Academic Success: A Multilevel Analysis of School Climate and Student Outcomes. Journal of Research in Education. Volume 25(68) Number 2.
- Allison, P. D. (2002). Missing data: Quantitative applications in the social sciences. Thousand Oaks, CA: Sage Publications.
- American Psychological Association Zero Tolerance Task Force (2008). Are zero tolerance policies effective in the schools: An evidentiary review and recommendations. American Psychologist, 63(9), 852-862.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, November 2025
Impact Factor: 7.67

- Author (forthcoming). Blinded for review. Barile, J., Donohue, D., Anthony, E., Baker, A., Weaver, S., & Henrich, C. (2012). Teacherstudent relationship climate and school outcomes: Implications for educational policy initiatives. Journal of Youth & Adolescence, 41(3), 256-267.
- Journal of Research in Education Volume 25 Number 2 79 Battistich, V., Solomon, D., Kim, D., Watson, M., & Schaps, E. (1995). Schools as communities, poverty levels of student populations, and students' attitudes, motives, and performance: A multilevel analysis. American Educational Research Journal, 32(3), 627-658.
- Bellmore, A., Nishina, A., You, J., & Ma, T. (2012). School context protective factors against peer ethnic discrimination across the high school years. American Journal of Community Psychology, 49(1-2): 98-111.
- Bryk, A. S., Sebring, P. B., Allensworth, E., Luppescu, S., & Easton, J. Q. (2010). Organizing schools for improvement: Lessons from Chicago. Chicago: University of Chicago. Center for Social and Emotional Education (2010). School climate research summary— January 2012. School Climate Brief, 1(1).
- Cohen, J., McCabe, E., Michelli, N., & Pickeral, T. (2009). School climate: Research, policy, practice, and teacher education. Teachers College Record, 111(1), 180–213.
- Coleman, J., Campbell, E., Hobson, C., McPartland, J., Mood, A., Weinfeld, F., & York, R. (1966). Equality of educational opportunity. Washington D.C.: U.S. Government Printing Office.